हैरियट टबमैंन

हैरियट टबमैंन

मैरीलैंड में एक दास लड़की

एक छह साल की दास लड़की इतनी बड़ी समझी जाती थी कि उसे काम पर लगाया जा सकता था. इसलिए 1826 में नन्हीं एरामिन्टा अपनी माँ से अलग कर दी गई और उसे घर के काम पर लगा दिया गया. अगर वह धीरे काम करती तो उसे पीटा जाता था.

उसकी माँ, हैरियट, और उसके पिता, बैन, उसकी कोई सहायता न कर सकते थे. जो दास शिकायत या झगड़ा करता उसे बेच दिया जाता था. मैरीलैंड के एक फार्म में एक दास के लिए जीवन कठिन था-लेकिन अन्य जगहों में स्थिती और भी भयंकर थी.

एरामिन्टा की माँ कभी-कभी कहा करती थी, “आदेश का पालन किया करो और घमंड करना बंद करो. अन्यथा तुम्हारा स्वामी तुम्हें दक्षिण में बेच डालेगा और वहाँ लोग तुम से इतना काम लेंगे कि तुम मर जाओगी.”

लेकिन उनकी बात सुन कर एरामिन्टा उन्हें गुस्से से देखती. वह एक विद्रोही लड़की थी.

उन दिनों अमरीका में उत्तर के प्रदेशों में दास मुक्त किये जा रहे थे. लेकिन दक्षिण में नहीं. दक्षिण में कपास और धान की खेती के लिए दासों की आवश्यकता रहती थी.

उत्तर के प्रदेशों में जो लेखक और पादरी दास प्रथा के विरोध कर रहे थे, उन्होने इस प्रथा को समाप्त करने के लिए आवाज़ उठाई. लेकिन दासों के स्वामियों ने कहा: “कभी नहीं!” और इस तरह देश एक राष्ट्रीय त्रासदी की ओर अग्रसर हो रहा था. परिणाम स्वरूप 30 वर्षों बाद अमरीका में एक भयंकर युद्ध आरम्भ हो गया.
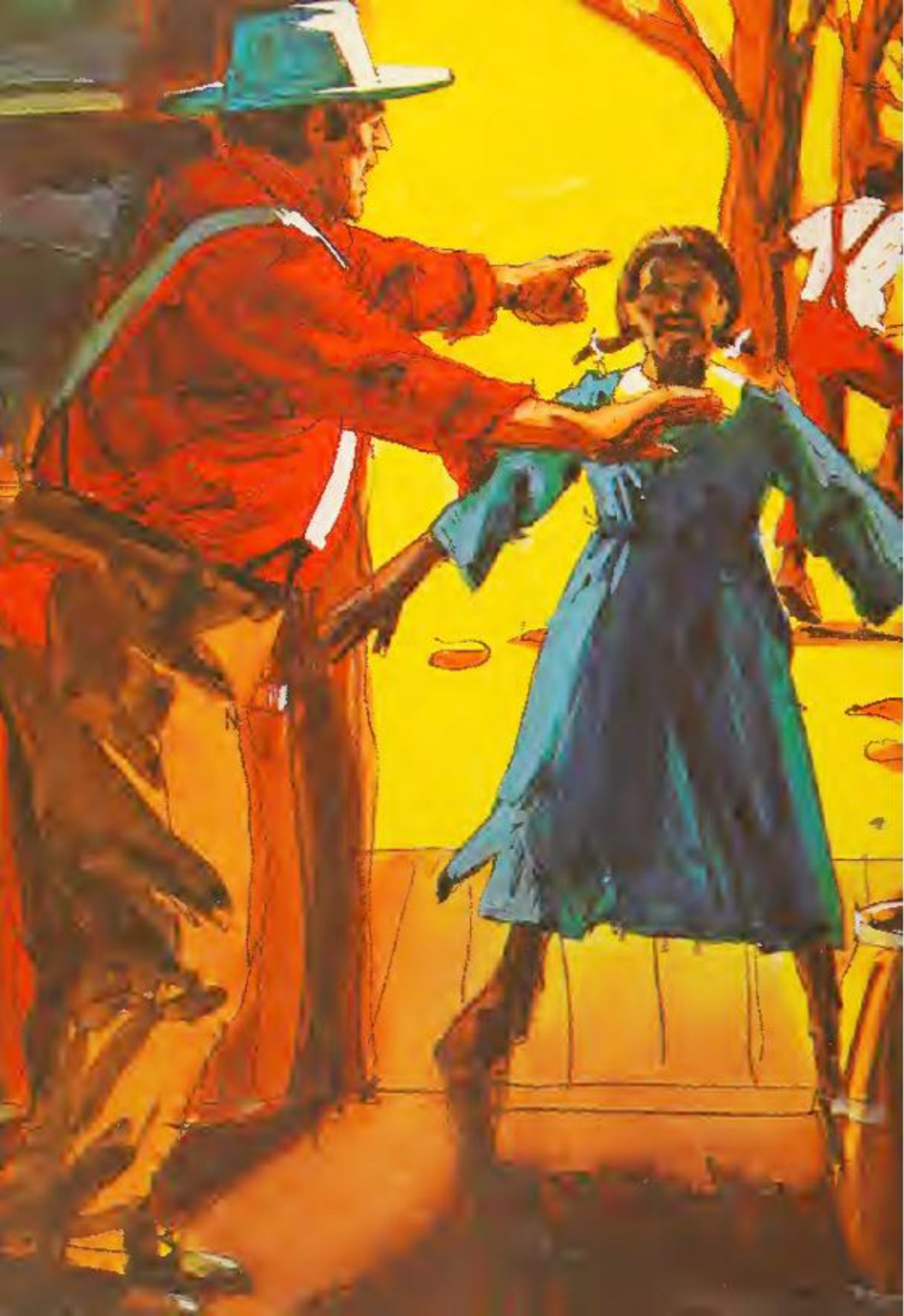
इस बीच कई दास स्वतंत्रता के सपने देख रहे थे.

जब वह तेरह वर्ष की थी, एरामिन्टा ने एक दास को भागने का प्रयास करते देखा. उस समय वह एक भंडार में थी. एक श्वेत आदमी ने चिल्ला कर उससे कहा, “उसे भगोड़े को रोको!” लेकिन एरामिन्टा ने निडरतापूर्वक सहायता करने से इंकार कर दिया.

वो श्वेत आदमी इतना क्रोधित हुआ कि उसने लोहे का एक भारी बाट एरामिन्टा के सिर पर दे मारा.

वह बुरी तरह घायल हो गई और मरते-मरते बची. इस चोट के कारण शेष जीवन काल में उसे बेहोशी के दौरे पड़ने लगे.

बड़े होने पर एरामिन्टा को लोग उसकी माँ के नाम, हैरियट, से बुलाने लगे. वह सिर्फ पाँच फुट लम्बी थी परन्तु वह एक पुरुष के समान शक्तिशाली थी. वह लकड़ी काटती थी, खेतों में कटाई करती थी, और अपने स्वामी के लिए एक पुरुष के बराबर काम करती थी.

सन 1844 में उसका विवाह जॉन टबमैंन के साथ हुआ जो एक मुक्त अश्वेत था. वह भी अपनी स्वतंत्रता का सपना देखती थी. लेकिन उसे पता चला कि तीन भाइयों सहित उसे दक्षिण में बेचा जाने वाला था.

भूमिगत रेलरोड
(Underground Railroad)

उसके पति ने उसकी कोई सहायता न की. लेकिन उसने सुना था कि एक ‘भूमिगत रेलरोड’ थी जो दासों को स्वतंत्रता की ओर ले जाती थी. उसने समझा कि यह ऐसी रेल थी जो भूमि के अंदर चलती थी. उसने निश्चय किया कि वह इस रेल का पता लगायेगी और उस पर सवार हो कर उत्तर की ओर जायेगी.

हैरियट टबमैंन के भाइयों ने भी उसके साथ भाग जाने का सोचा. लेकिन बाद में वह भयभीत हो गये.
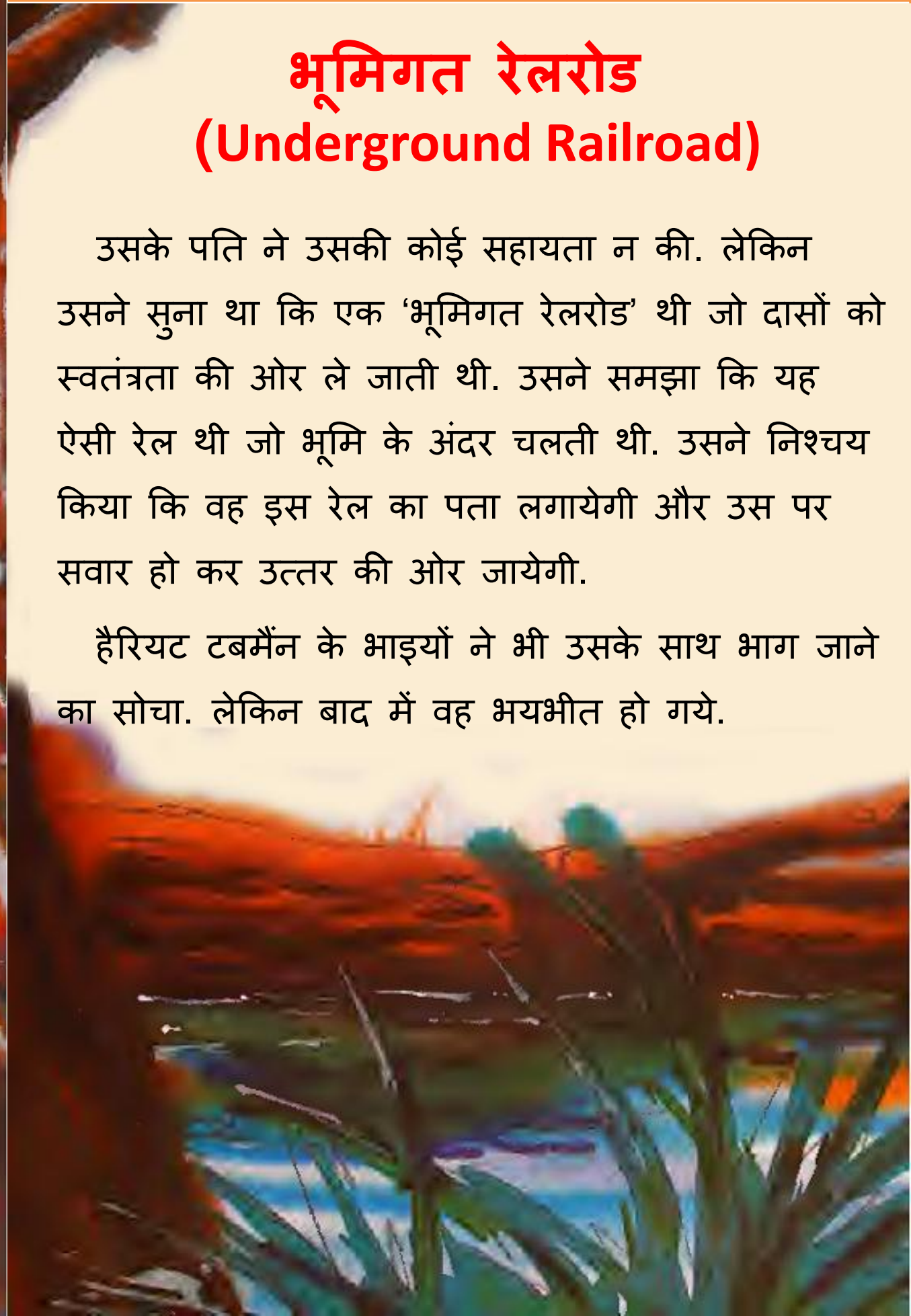
वह वापस लौट आये. लेकिन वह भाग गई. उसने एक ऐसी दयालु श्वेत महिला के घर में शरण ली जिसने कभी उसकी सहायता करने का वचन दिया था.

“भूमिगत रेलरोड कोई सच की रेल नहीं है,” उस महिला ने हैरियट को बताया. “यह तो कई घरों की श्रृंखला है. हर घर का स्वामी दास प्रथा से घृणा करता है. यह लोग तुम्हें शरण देंगे और फिर उत्तर की ओर जाने वाले मार्ग पर स्थित घरों में भेज देंगे.”

हैरियट एक घर से दूसरे घर यात्रा करती रही.

‘रेलरोड स्टेशनों’ के दयालु श्वेत स्वामियों ने उसे छिपा कर रखा और उसे भोजन दिया. कुछ लोग अपनी घोड़ा-गाड़ियों में छुपा कर उसे उत्तर की ओर ले गये. अंतत वह पेनसिलवेनिया पहुँच गई, जहाँ दास प्रथा नहीं थी. सूर्य उदय हो रहा था. यह अनुभव करने के लिए कि अभी भी वह वही व्यक्ति थी, उसने अपने हाथों को देखा. हाँ, वह अभी भी हैरियट थी. लेकिन अब वह स्वतंत्र थी. बाद में उसने बताया, “मुझे लगा जैसे में स्वर्गलोक में पहुँच गई थी. मैं अंतत मुक्त हो गई थी.”

अपने लोगों की हजरत मूसा

हैरियट अपने उन सम्बन्धियों को नहीं भूली जो पीछे छूट गये थे और अभी भी दास थे. वह एक होटल में काम करने लगी और पैसे बचाने लगी. उसकी योजना थी कि वह मैरीलैंड वापस जायेगी और जो पीछे रह गये थे उन्हें मुक्त कराएगी.

हैरियट को पता चला कि उसकी बहन का परिवार बिकने जा रहा था. सहासी क्वेकर लोगों ने पति, पत्नी और दो छोटे बच्चों को दासों के बाड़े से छुड़ा लिया.

हैरियट उनसे बाल्टिमोर में मिली और ‘भूमिगत रेलरोड’ में यात्रा करने में उनकी सहायता की और वह सब स्वतंत्र हो गये.

भगोड़े दासों को लेकर एक कानून 1850 में बनाया गया. अब भगोड़े दास उत्तर के प्रदेशों में भी सुरक्षित न रहे.

इस कानून के अंतर्गत उन्हें कैद किया जा सकता था. उनकी सहायता करने वाले लोग भी कैद किये जा सकते थे.

लेकिन ‘भूमिगत रेलरोड’ बंद न हुई. बस इसके स्टेशन कनाडा तक बढ़ गये. हैरियट फिर वापस गई और अपने भाई और दो अन्य लोगों को उसने मुक्त किया. फिर 1851 में वह अपने पति को मुक्त कराने के लिए आई. लेकिन उसने दूसरा विवाह कर लिया था और उसने उत्तर की ओर जाने से मना कर दिया.

हैरियट बहुत अपमानित और दुःखी हुई. लेकिन खतरों से भरे दासों के प्रदेश की अपनी यात्रा वह व्यर्थ नहीं गंवा सकती थी. उसने कुछ अन्य दासों को इकट्ठा किया और उन्हें कनाडा ले आई.

आने वाले वर्षों में इस प्रकार कई दासों को मुक्त करा कर वह कनाडा ले गई. हैरियट टबमैंन 'भूमिगत रेलरोड' की सबसे प्रसिद्ध मार्गदर्शक बन गई. वह किसी खेत के निकट आकर गाने लगती, *जाने दो मेरे लोगों को.* यह दासों के लिए एक संकेत था. दास चुपचाप आकर उसके साथ निकल भागते.

दासों के शिकारियों से बचते-बचाते, भूख और मौसम की मार सहते-सहते, वह लोगों को एक घर से दूसरे घर ले जाती और इस तरह वह सैंकड़ों मील दूर कनाडा पहुँचते.

दास उसे मूसा बुलाते क्योंकि वह उन लोगों के लिए उन पैगंबर समान थी जो इजराइल के लोगों को इजिप्ट से बचा कर उनकी प्रोमिज्ड लैंड में ले आये थे.

दासों के श्वेत शिकारियों ने उसे पकड़ने के लिए पुरस्कार की घोषणा कर दी. जो कोई उसे पकड़ने में सफल होता उसे चालीस हज़ार डॉलर का पुरस्कार मिलता. लेकिन उसे कोई भी पकड़ न पाया. वह कहा करती थी कि संकट के समय ईश्वर उसकी सहायता करते थे. हैरियट स्वयं भी छल और छद्मवेश में बहुत कुशल थी.

अगर कोई दास भयभीत हो कर वापस जाना चाहता तो वह अपनी पिस्तौल निकाल लेती और कहती: "मुक्त हो जाओ या मरने के लिए तैयार हो जाओ." वह जानती थी कि अगर कोई दास वापस चला गया तो श्वेत लोग उसे 'भूमिगत रेलरोड' का भेद बताने के लिए बाध्य कर देंगे.

लेकिन कोई दास वापस नहीं गया. उसने दक्षिण के 19 चक्कर लगाए और लगभग 300 पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को बचा कर मुक्त कराया.

वह कहती थी, "अपनी रेल को मैं कभी गलत रास्ते नहीं ले गई. मैंने कभी कोई यात्री नहीं खोया."

गृह युद्ध की वीरांगना

हैरियट अपने माता-पिता को मुक्त कराने में भी सफल हो गई. लेकिन तब भी दक्षिण में अनेक दास दयनीय दशा में जीवन बिता रहे थे. कई लोग यह मानने लगे थे कि दास प्रथा का अंत रक्तपात से ही होगा.

अमरीका में 1861 में गृह युद्ध शुरू हो गया. आरम्भ में राष्ट्रपति लिंकन दास प्रथा का खुल कर विरोध करने से हिचक रहे थे. लेकिन यूनियन सेना ने दासों और मुक्त हुए दासों को सेना में भर्ती करने में कोई संकोच नहीं किया. पोर्ट रॉयल, दक्षिण कैलिफ़ोर्निया में हैरियट टबमैंन भी युद्ध में भाग लेने के लिए आगे आई. शुरू में उसने एक कैंप अस्पताल में नर्स का काम किया. बाद में उस स्थान के दासों के गुरिल्ला दस्ते बनाने का काम उसे सौंपा गया. उसने यूनियन सेना के लिए एक गुप्तचर और स्काउट का काम किया.

2 जून 1863 को उसने 300 अश्वेत सैनिकों की उस टुकड़ी का पथ प्रदर्शन किया जिसने कम्बाही नदी पर धावा बोला. उस हमले की वास्तविक नायक वह थी.

इस धावे में यूनियन सेना ने शत्रु सेना का भण्डार नष्ट कर दिया और 800 दासों को मुक्त किया. पूर्व के समाचार पत्रों में इस कारनामे का वर्णन छपा और वह प्रसिद्ध हो गई.

जब 1865 में युद्ध समाप्त हुआ, वह एक अस्पताल में काम कर रही थी और मुक्त दासों की सेवा कर रही थी. थकी-माँदी वह ऑबर्न, न्यू यॉर्क, चली आई जहाँ उसके माता-पिता रहते थे.

संविधान के तेरहवें संशोधन द्वारा यूनाइटेड स्टेट्स में दास प्रथा सदा के लिए समाप्त कर दी गई. लेकिन हैरियट ने देखा कि अश्वेत तब भी गरीब और अशिक्षित थे. हर गरीब अश्वेत के लिए, जिसे किसी प्रकार की मदद चाहिए थी, उसने अपने घर के द्वार खोल दिए. बाद में उसने वृद्ध और असहाय लोगों के लिए एक विश्राम घर बनाया. जो वृद्ध और बीमार उस पर निर्भर थे उनकी सहायता करने के लिए वह सब्ज़ियाँ बेचती थी.

हैरियट टबमैंन का निधन 10 मार्च 1910 को हुआ. पूरे सैनिक सम्मान के साथ उसका अंतिम संस्कार हुआ.

समाप्त